हिन्दी अनिवार्य

कक्षा -12

आरोह (पद्य - खंड)

अध्याय - 1

हरिवंश राय बच्चन (आत्म परिचय : एक गीत)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर -

1. **हरिवंश राय बच्चन का जन्म कब हुआ था?**

(1) 1907 ई. इलाहाबाद (2) 1807 ई. म. प्र. (3) 1908 ई. पुणे (4) 1957 ई. पंजाब (1)

2. **मधुशाला (1935 ई.) एवं मधुकलश (1938 ई.) किस कवि के काव्य संग्रह है?**

(1) अज्ञेय (2) हरिवंशराय बच्चन (3) निराला (4) मुक्तिबोध (2)

3. **'बच्चन ग्रंथावली' कितने खंडों में प्रकाशित है?**

(1) 12 खंड (2) 15 खंड (3) 20 खंड (4) 10 खंड (4)

4. **हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा कितने खंडों में प्रकाशित है?**

(1) 2 खंड (2) 5 खंड (3) 4 खंड (4) 6 खंड (3)

5. **बच्चन की मधुशाला कविता में 'एक घूट' किसका एक घूट है?**

(1) मृत्यु का (2) बचपन का (3) जीवन का (4) आनंद का (3)

6. **हरिवंश राय बच्चन की मृत्यु कब हुई थी?**

(1) 2007 ई. कलकत्ता (2) 2008 ई. बंगाल (3) 2003 ई. मुम्बई (4) 2004ई. पुणे(3)

7. **'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस कवि की आत्मकथा है?**

(1) अज्ञेय (2) निराला (3) बच्चन (4) कुँवर नारायण (3)

8. **'प्रवासी की डायरी' किस कवि की डायरी है?**

(1) निराला (2) बच्चन (3) महादेवी (4) पंत (2)

9. **बच्चन के अनुसार मनुष्य का दुनिया से किस प्रकार का संबंध है?**

(1) मोह- माया का (2) प्रीति-कलह का (3) भेदभाव का (4) जन्म-मृत्यु का (2)

10. **कवि बच्चन ने जीवन को किसका सामंजस्य कहा है?**

(1) विरूद्धों (2) अपनत्व का (3) भूलों का (4) प्रीति का (1)

11. **निम्नलिखित में से छायावादोत्तर गीतिकाव्य के रचनाकार कौन है?**

(1) निराला (2) उमाशंकर जोशी (3) बच्चन (4) पंत (3)

एक पंक्ति/शब्द के प्रश्नोत्तर -

1. **'यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है बच्चन की कविता दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है।' की ये पंक्ति क्या प्रेरणा देती है?**

उत्तर- लक्ष्य की ओर बढ़ने तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयास करने का।

2. **मध्ययुगीन किस फारसी कवि का मस्तानापन हरिवंशराय बच्चन की कविताओं में अर्थ-विस्तार पाता है?**

उत्तर- उमर खय्याम का।

3. **'जीवन एक तरह का मधुकलश है, दुनिया मधुशाला है, कल्पना साकी और कविता वह प्याला हे जिसे ढ़ालकर जीवन पाठक को पिलाया जाता है।' उपर्युक्त पंक्तियाँ बच्चन की किस कविता से है?**

उत्तर- मधुशाला से।

4. **बच्चन की कविताएँ किस दर्शन से प्रभावित हैं?**

उत्तर- हालावादी दर्शन से।

5. **बच्चन की 'आत्म परिचय' कविता किस गीत संग्रह से है?**

उत्तर- निशा निमंत्रण से।

6. **'आत्म परिचय' और 'निशा निमंत्रण' गीत किस कवि द्वारा लिखे गये हैं?**

उत्तर- हरिवंश राय बच्चन द्वारा।

7. **'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' बच्चन के इस काव्य पंक्ति में 'भार' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- बोझ, संघर्ष और जिम्मेदारी।

8. **'साँसों के दो तार' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**

उत्तर- रूपक।

9. **'मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ' बच्चन की इस काव्य पंक्ति में 'उद्‌गार' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- मन के विचार एवं भावनाएँ।

10. **'मैं और, और जग और .....' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**

उत्तर- यमक अलंकार।

11. **'मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।' बच्चन की 'आत्म परिचय' कविता की इस पंक्ति में 'मौजों' शब्द का क्या अर्थ है?**

उत्तर- लहरें।

12. **बच्चन की प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए।**

उत्तर- बच्चन ने प्रमुख रूप से मधुशाला (1935 ई), मधुबाला (1938 ई), मधुकलश (1938 ई.), निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ (सभी काव्य संग्रह) रचनाएँ लिखी हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. **बच्चन की आत्म परिचय कविता का मूल भाव क्या है?**

उत्तर- हरिवंशराय बच्चन अपनी आत्म परिचय कविता के माध्यम, से यह कहना चाहते हैं कि संसार को जानने से ज्यादा कठिन है मनुष्य द्वारा स्वयं की पहचान करना। जीवन की राह खट्टे-मीठे संघर्षों की राह है और संघर्षों के साथ सामंजस्य की राह है। मनुष्य दुनिया से अलग होकर अपनी पहचान नहीं बना सकता है।

2. **'निशा निमंत्रण' गीत का मूल भाव क्या है?**

उत्तर- हरिवंश राय बच्चन 'निशा निमंत्रण' गीत में प्रकृति के पल-पल होते परितर्वन में सजीव प्राणी वर्ग जिसमें विशेष रूप से मानवीय उल्लास को देखने का प्रयास करता है। साथ ही संघर्ष के साथ लक्ष्य -प्राप्ति तथा प्रकृति के आँखों से नहीं

दिखने वाले सत्य को आत्मा से महसूस करवाना भी इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

3. **'नादान वहीं है हाय, जहाँ पर दाना' पंक्ति में कवि का क्या आशय है?**

उत्तर- इय पंक्ति में कवि हरिवंश राय बच्चन कहना चाह रहे हैं कि नादान प्राणी अर्थात् मनुष्य और उसका स्वार्थ वहीं तक सीमित है जहाँ पर उसको दाना अर्थात् आजीविका मिलती है। प्रत्येक मनुष्य संसार में केवल अपने स्वार्थों तक ही सीमित है।

4. **'बच्चे प्रत्याशा में होंगे,**
नीड़ो से झाँक रहे होंगे।'
बच्चन की कविता 'दिन-जल्दी-जल्दी ढलता है' की उपर्युक्त पंक्तियों का क्या आशय है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों का आशय है कि घौंसला और घरों में बच्चे जब दिन ढ़लता है तो अपने माता-पिता के इंतजार में रहते हैं और उनके आशा रहती है कि वे अपने माता-पिता से घर लौटने पर कुछ न कुछ जरूर प्राप्त करेंगे और माता-पिता भी इस आशा में जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते है कि घर पर बच्चे उनका इंतजार कर रहे होंगे और दिन ढ़लने तक उनको घर पहुँचना हैं। इस प्रकार से दोनों ही तरफ से प्रत्याशा रहती है जो मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा पैदा करती है।

5. **बच्चन के काव्य की शैलीगत विशेषताएँ लिखो।**

उत्तर- बच्चन मुख्य रूप से हालावादी दर्शन के रचनाकार है इसलिए उन्होंने अपने काव्य की भाषा सरल और जीवंत रखी है। बच्चन की काव्य भाषा में संवेदना के साथ-साथ संगीतात्मकता भी हैं। बच्चन ने अपने काव्य को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। काव्य में विभिन्न अलंकारों जैसे यमक, अनुप्रास, रूपक और उपमा का बहुत ही सुंदर और यथास्थान प्रयोग किया है। बच्चन के काव्य की भाषा पाठक के अन्तर्मन में जोश ओर ऊर्जा का संचार करती है।

व्याख्यात्मक प्रश्न -

1. **'मैं जला हृदय में अग्नि दहा करता हूँ**
सुख - दु:ख दोनों में मग्न रहा करता हूँ
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।'
उपर्युक्त पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करो -

उत्तर- 'मैं जला हृदय ..... बहा करता हूँ।'

(1) संदर्भ - उपर्युक्त काव्यांश आधार हिंन्दी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के अध्याय-एक हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्म परिचय' से लिया गया है।

(2) प्रसंग - उपर्युक्त पद्यांश में कवि बच्चन प्रत्येक परिस्थितियों में चाहे वह सुख की हो या दु:ख की, में सदैव मस्त एवं प्रसन्न रहने की बात कहता है।

(3) व्याख्या - कवि कहता है कि मनुष्य जीवन में सुख और दु:ख दोनों आते है, लेकिन मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में बेहद दु:खी हो जाता है, वह अंदर ही अंदर हृदय में अग्नि की तरफ जलता रहता है। लेकिन कवि चाहता है कि ऐसा न होकर मनुष्य को प्रत्येक परिस्थितियों में खुश रहना चाहिए।

कवि बच्चन कहते हैं कि मनुष्य संसार के कठिन परिस्थितियों से बचाने के लिए अनेक प्रकार के उपाय करता है लेकिन कवि स्वयं बिना किसी सहारे के इन कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपना जीवन मस्ती और सुखी से बीताता है। काव्य पंक्तियों में मुख्य संदेश यही है कि हमें प्रत्येक परिस्थिति में चाहे

वह विपरीत ही क्यों न हो, मजबूती से मुकाबला करते हुए समदर्शी रहना चाहिए।

(4) विशेष - 1. पद्यांश की भाषा सरल एवं लयात्मक है।

2. पद्यांश की शैली आत्मकथात्मक है।

3. रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

4. काव्य पंक्तियों में उत्साह स्थायी भाव भी है।